सूरह — एक कहानी

सूरह अल-इख़्लास

ख़ालिस तौहीद

पूरा सफ़र — चार सतरें, क़ुरआन का तीसरा हिस्सा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 112 • 4 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

कुल हुवल्-लाहु अहद
1. कह दीजिए: वो अल्लाह है, एक।

अल्लाहुस्-समद
2. अल्लाह बे-नियाज़ है, जिसकी तरफ़ सब मुहताज हैं।

लम यलिद व लम यूलद
3. न उसने किसी को जना, न वो किसी से पैदा हुए।

व लम यकुल्-लहू कुफ़ुवन अहद
4. और कोई भी उसका हमसर नहीं।

इन्नहा ता'दिलु सुलुसल्-क़ुरआन
यह क़ुरआन के तीसरे हिस्से के बराबर है।

चार सतरें, तीसरा हिस्सा

बेटा, यह सूरह सिर्फ़ चार सतरें है — और नबी ﷺ ने फ़रमाया कि यह क़ुरआन के तीसरे हिस्से के बराबर है।

सहाबा ने पूछा: क्या हम में से कोई एक रात में एक तिहाई क़ुरआन पढ़ सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है।

बेटा, और इसकी वजह उलमा ने यह बयान की: क़ुरआन के मज़ामीन तीन बड़े हिस्सों में हैं — अल्लाह की पहचान (तौहीद), अहकाम, और क़िस्से। और यह सूरह पूरी की पूरी पहले हिस्से को — अल्लाह की ज़ात की पहचान को — अपने अंदर समेट लेती है।

और एक वाक़िआ है जो बहुत प्यारा है। एक सहाबी अपनी जमाअत को नमाज़ पढ़ाते थे, और हर रकअत में दूसरी सूरह के साथ यह सूरह ज़रूर पढ़ते। लोगों ने शिकायत की। नबी ﷺ ने उनसे वजह पूछी। उन्होंने कहा: मुझे यह सूरह बहुत महबूब है। और आप ﷺ ने फ़रमाया: **उसी मोहब्बत ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया।**

बेटा, सोचिए — एक शख़्स को जन्नत की बशारत इसलिए मिली कि उसे अल्लाह की पहचान वाली सूरह से इश्क़ था।

और एक और वाक़िआ: एक शख़्स रात भर यही सूरह दोहराता रहा। सुबह नबी ﷺ के पास ज़िक्र हुआ, और आप ﷺ ने फ़रमाया: क़सम उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, यह एक तिहाई कुरआन के बराबर है।

कह दीजिए: वो एक है

बेटा, यह सूरह उस वक़्त नाज़िल हुई जब लोगों ने नबी ﷺ से कहा: हमें अपने रब का नसब बताइए — वो किससे बने, उनका ख़ानदान क्या है?

और जवाब आया:

'कुल हुवल्लाहु अहद — कह दीजिए: वो अल्लाह है, एक।'

बेटा, अरबी में 'एक' के दो लफ़्ज़ हैं — 'वाहिद' और 'अहद'। और यहाँ 'अहद' चुना गया, और यह फ़र्क़ बहुत अहम है।

'वाहिद' वो एक है जिसके साथ दो, तीन, चार आ सकते हैं। एक आदमी, दो आदमी। यानी वो गिनती का पहला अदद है।

'अहद' वो एक है जिसके साथ दूसरा हो ही नहीं सकता। वो गिनती में आता ही नहीं। वो यकता है — अपनी ज़ात में, अपनी सिफ़ात में, अपने कामों में।

बेटा, और यह लफ़्ज़ कुरआन में अल्लाह के लिए इस तरह सिर्फ़ यही इस्तेमाल हुआ है।

और 'हुवा' — 'वो' — का लफ़्ज़ पहले लाया गया। यानी: वो जिसके बारे में तुम पूछ रहे हो, वो जिसकी तलाश हर दिल में है, वो — अल्लाह है, अहद।

अस-समद

'अल्लाहुस्-समद।'

बेटा, यह क़ुरआन का वो लफ़्ज़ है जिसका कोई एक तरजुमा काफ़ी नहीं। सलफ़ ने इसके कई मअनी बताए, और सब सही हैं:

एक: 'अस-समद' वो है जिसकी तरफ़ हर हाजत में रुजू किया जाता है। यानी वो दरवाज़ा जिस पर सब जाते हैं। बेटा, अरबी में 'समदा इलैहि' का मतलब है किसी की तरफ़ क़स्द करना, सीधा उसकी तरफ़ जाना।

दो: वो जो ख़ुद किसी का मुहताज नहीं। हर चीज़ को वो चाहिए, और उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।

तीन: वो जो कामिल है — जिसमें कोई कमी नहीं, कोई ख़ाली जगह नहीं।

बेटा, अब इन तीनों को जोड़िए: वो भरे हुए हैं, उन्हें किसी से कुछ नहीं चाहिए — और इसी लिए सब कुछ उन्हीं से माँगा जाता है।

और बेटा, इस एक लफ़्ज़ में आपकी पूरी ज़िंदगी का एक सबक़ है। आप जिससे भी माँगते हैं, वो ख़ुद किसी का मुहताज है। आपका अफ़सर अपने अफ़सर का मुहताज है। आपका डॉक्टर अपनी सेहत का मुहताज है। हर वो दरवाज़ा जिस पर आप दस्तक देते हैं, उसके अंदर भी कोई है जो ख़ुद किसी और के दरवाज़े पर खड़ा है।

सिर्फ़ एक दरवाज़ा ऐसा है जिसके पीछे कोई दूसरा दरवाज़ा नहीं। वही 'अस-समद' है।

न जना, न पैदा हुए

'लम यलिद व लम यूलद — न उसने किसी को जना, न वो किसी से पैदा हुए।'

बेटा, यह एक जुमला हर उस अक़ीदे का जवाब है जो अल्लाह के लिए औलाद या वालिदैन साबित करता है।

'लम यलिद' — उनकी कोई औलाद नहीं। क्योंकि औलाद उस चीज़ की ज़रूरत होती है जो फ़ानी हो, जिसे अपना सिलसिला चलाने की फ़िक्र हो। जो हमेशा ज़िंदा है, उसे वारिस की क्या ज़रूरत?

'व लम यूलद' — और वो ख़ुद किसी से पैदा नहीं हुए। यानी उनसे पहले कोई नहीं था।

वो अव्वल हैं — जिनकी कोई इब्तिदा नहीं।

बेटा, इंसानी ज़ेहन हर चीज़ के लिए पूछता है 'यह कहाँ से आई?' और यह सवाल हर चीज़ पर सही है — सिवाए उस ज़ात के जो हर चीज़ की इब्तिदा है। क्योंकि अगर उसकी भी कोई इब्तिदा होती, तो वो ख़ुदा ही न होते — वो भी एक मख़्लूक़ होते।

'व लम यकुल्-लहू कुफ़ुवन अहद — और कोई भी उसका हमसर नहीं।'

बेटा, 'कुफ़ु' का मतलब है बराबर का, हम-पल्ला, जोड़ा। निकाह में भी यही लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है — 'कुफ़ु' यानी बराबर का रिश्ता।

तो आयत का मतलब है: कोई उसके दर्जे का नहीं, न कोई उसका साथी, न कोई उसका मुक़ाबिल।

बेटा, और इस आख़िरी आयत ने हर ख़ाली जगह बंद कर दी। पहले कहा: वो एक है। फिर: वो बे-नियाज़ हैं। फिर: न औलाद न वालिद। और आख़िर में: और कोई भी किसी भी तरह उनके बराबर नहीं।

चार सतरें, और तौहीद का हर दरवाज़ा बंद।

इसे अपना बना लीजिए

बेटा, अब यह देखिए कि इस सूरह का अमल क्या है।

नबी ﷺ हर रात सोने से पहले अल-इख़्लास, अल-फ़लक़ और अन-नास पढ़ कर हाथों पर फूँकते थे और जिस्म पर फेरते थे — तीन मर्तबा।

फ़ज्र और मग़रिब के बाद ये तीनों सूरहें तीन तीन बार पढ़ने की ताकीद आई है — फ़रमाया गया कि ये हर चीज़ से काफ़ी हो जाएँगी।

और नबी ﷺ फ़ज्र की सुन्नतों में और मग़रिब की सुन्नतों में यह सूरह पढ़ते थे।

बेटा, इसका मतलब यह है कि यह सूरह आपके दिन का पहला और आख़िरी हिस्सा बन सकती है।

और एक आख़िरी बात। यह सूरह 'अल-इख़्लास' कहलाती है — ख़ालिस कर देने वाली। दो वजूहात से: यह अल्लाह की पहचान को हर मिलावट से ख़ालिस कर देती है, और जो इसे समझ कर पढ़ता है, उसके अपने दिल को भी शिर्क की हर मिलावट से साफ़ करती है।

बेटा, और याद रखिए कि उस सहाबी को जन्नत की ख़ुशख़बरी किसी बड़े अमल पर नहीं मिली थी — सिर्फ़ इसलिए मिली कि यह सूरह उन्हें महबूब थी।

तो इसे सिर्फ़ पढ़िए मत। इसे अपना बना लीजिए।

इस सूरह से क्या सीखा

1. चार सतरें — और क़ुरआन के तीसरे हिस्से के बराबर, क्योंकि यह पूरी की पूरी अल्लाह की पहचान है।

2. 'अहद' वो एक है जिसके साथ दूसरा हो ही नहीं सकता — यह गिनती वाला एक नहीं है।

3. 'अस-समद' — वो भरा हुआ दरवाज़ा जिसके पीछे कोई दूसरा दरवाज़ा नहीं; हर वो शख़्स जिससे आप माँगते हैं, ख़ुद किसी का मुहताज है।

4. औलाद उस चीज़ की ज़रूरत है जो फ़ानी हो — जो हमेशा ज़िंदा है उसे वारिस नहीं चाहिए।

5. वो किसी से पैदा नहीं हुए — यानी वो हर इब्तिदा की इब्तिदा हैं।

6. 'कुफ़ुवन अहद' ने आख़िरी ख़ाली जगह भी बंद कर दी — न साथी, न मुक़ाबिल, न बराबर का।

7. एक सहाबी को जन्नत की बशारत इसलिए मिली कि यह सूरह उन्हें महबूब थी — इसे सिर्फ़ पढ़िए मत, इससे मोहब्बत कीजिए।

या अल्लाह, हमारे दिलों को हर मिलावट से ख़ालिस कर दीजिए, और हमें सिर्फ़ अपना बना लीजिए। आमीन।